The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)

6

परिवर्तन की दस्तकः रोहतक जिले में ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षा की वास्तविकता और संभावनाएँ

1) **पूजा कुमारी**, शोधार्थी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब
2) **सन्तोष कुमार यादव**, 'रिसर्च & डेवलपमेंट सेल लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब
3) **शालिनी राणा**, अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर
4) **बलवान सिंह**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एडुकेशन, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर.

Page No. 36- 51

सारांश

शिक्षा किसी भी समाज के विकास और सशक्तिकरण की आधारशिला मानी जाती है। भारत जैसे देश में, विशेषकर हरियाणा के संदर्भ में, महिलाओं की शिक्षा को लेकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट असमानताएँ देखने को मिलती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र रोहतक जिले में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के शैक्षिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षा के अवसर, सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक पृष्ठभूमि और सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर दोनों क्षेत्रों की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में किस प्रकार के अंतर उभरते हैं। इस शोध के लिए डेटा प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किया गया, जिसमें कुल 300 महिलाएँ (150 ग्रामीण और 150 शहरी) शामिल की गईं।

अध्ययन में पाया गया कि शहरी महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक सुगम है। दूसरी ओर, ग्रामीण महिला शिक्षा को सामाजिक रूढ़ियाँ, आर्थिक सीमाएँ और पारंपरिक सोच जैसे कारक बाधित करते हैं। यह शोध नीति-निर्माताओं और सामाजिक संगठनों को महत्त्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है, जिनके आधार पर महिला शिक्षा को मजबूत कर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

मुख्य शब्दः *महिला शिक्षा, ग्रामीण-शहरी अंतर, लैंगिक असमानता, शैक्षिक विभाजन, सशक्तिकरण*

भूमिकाः

किसी भी राष्ट्र की उन्नति और विकास में उस राष्ट्र के नागरिकों की एक अहम भूमिका होती है। भारत जैसे राष्ट्र की विकासशील अर्थव्यवस्था की बढ़ोतरी में महिलाओं एवं पुरुष दोनों का

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

योगदान एक समान महत्वपूर्ण है। महिलाएँ हमारे समाज का एक अभिन्न अंग हैं तथा समाज के अस्तित्व एवं विकास में ये उतनी ही भूमिका का निर्वाह करती है, जितना एक पुरुष करता है। (1)

किंतु महिलाओं के योगदान को कमतर आंकने की प्रवृत्ति सभी राष्ट्रों में काफी समय से चली आ रही है। हमारा समाज कमोवेश एक पितृसत्तात्मक समाज है जहाँ महिलाओं के महत्व को केवल घरेलू कार्यों एवं कर्तव्यों तक ही आँका गया हैं। समय के अनुरूप हमें उनकी परिस्थितियों में परिवर्तन देखने को मिलता है। जब हम अपने पुरातन इतिहास का सर्वेक्षण करते है तो ज्ञात होता है कि वैदिक काल में घोषा, लोपमुद्रा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, अदिति, मैत्रेयी और गार्गी जैसी महिलाएँ प्रमुख विदुषियाँ थीं, जिन्होंने दर्शन, अध्यात्म और मंत्र रचना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। (2)

वहीं मध्य काल की ओर देखें तो महिलाओं की स्थिति के कई अपमानजनक साक्ष्य देखने को मिलते हैं जैसे सतीप्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनःविवाह पर रोक इत्यादि व्यापक रूप से प्रख्यात थी। भारत में अंग्रेजों के शासनकाल में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए अंग्रेजों द्वारा कुछ क्रांतिकारी नियम पारित किए गए। 19वीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन के सुधारकों द्वारा भी महिलाओं के सुधार के लिए काफी प्रयास किए गए।

1947 में स्वतंत्रता के बाद भारतीय सरकार द्वारा संविधान में सबके लिए समान अधिकारों की घोषणा की गई। सभी नागरिकों को समानता के अधिकार ने समाज के अछूतों जैसे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के साथ-साथ महिलाओं के लिए क्रांतिकारी परिवर्तन का वादा किया।

प्राचीन समय से लेकर आज तक भारत में महिलाओं की शिक्षा का मुद्दा हमेशा से एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। यह न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि समाज के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे को भी सीधे तौर पर प्रभावित करता है। शिक्षा महिलाओं को समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने, अपनी आजीविका का साधन बनाने और सबसे महत्वपूर्ण अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने का अवसर प्रदान करती है।

जब हम महिला शिक्षा की बात करते हैं तो यह केवल स्कूलों और कॉलेजों तक सीमित नहीं होती बल्कि इसके दायरे में समाज की परंपराएँ, संस्कृति, आर्थिक स्थिति और सरकार की नीतियाँ भी शामिल हैं। (3)

भारत में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा को लेकर कई बाधाएँ मौजूद हैं। पारंपरिक सोच, सामाजिक रूढ़ियाँ, परिवारों में महिलाओं की भूमिका के बारे में बनाए गए पूर्वाग्रह और आर्थिक कठिनाइयाँ ऐसी समस्याएँ हैं जो ग्रामीण महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करने में अड़चनें डालती हैं। वहीं शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के अवसर अधिक होते हैं लेकिन शहरी

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

जीवन की अपनी चुनौतियाँ हैं जैसे उच्च शिक्षा तक पहुँचने की कठिनाइयाँ, कामकाजी महिलाएँ होने के कारण समय की कमी और नौकरी के अवसरों में लैंगिक भेदभाव इत्यादि।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा में किस प्रकार की असमानताएँ हैं और इन असमानताओं के पीछे कौन से सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया जाएगा कि सरकारी योजनाओं और नीतियों ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में कितनी सफलता प्राप्त की है और इन योजनाओं का ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों पर कितना प्रभाव पड़ा है।

रोहतक जिला, जो हरियाणा राज्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इस अध्ययन के लिए उपयुक्त स्थल है। इस जिले का नाम इसके मुख्यालय शहर रोहतक से लिया गया है, जिसे रोहताशगढ़ भी कहा जाता था। परंपरागत रूप से इसका नाम राजा रोहताश के नाम पर रखा गया है जिनके समय पर इस शहर का निर्माण हुआ था। एक अन्य संस्करण रोहतक को रोहितक से जोड़ता है, जिसका उल्लेख महाभारत में पांडव योद्धा नकुल के अभियान के संबंध में किया गया है।

यह जिला हरियाणा राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह उत्तर में जींद और सोनीपत जिले से घिरा है, दक्षिण में झज्जर जिला, पूर्व में झज्जर और सोनीपत जिले और पश्चिम में हिसार और भिवानी जिले से घिरा हुआ है। इस जिले में 2 तहसीलें, 2 उप-तहसीलें, 5 विकास खंड, 3 कस्बे, 146 गावं बसे हुए हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार इस जिले की जनसंख्या 10.61 लाख है जिसमें प्रति किलोमीटर 608 व्यक्तियों का घनत्व है। जिले में लिंगानुपात चिंताजनक रूप से कम है जो कि प्रति हजार पुरुषों पर 867 महिलाएँ हैं। (4)

यहाँ के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा के संदर्भ में स्पष्ट भिन्नताएँ देखी जा सकती हैं। 1971 से 2011 तक की अवधि में यहाँ की महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, लेकिन यह वृद्धि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमान रूप से वितरित हुई है। इस शोध में महिला शिक्षा के इन दोनों क्षेत्रों में मौजूद अंतर को गहराई से समझने की कोशिश की गई है। क्या ये असमानताएँ केवल भौतिक साधनों की कमी के कारण हैं या इसके पीछे सामाजिक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रह भी काम कर रहे हैं?

इस अध्ययन का उद्देश्य महिला शिक्षा में सुधार के लिए न केवल समस्याओं को पहचानना है, बल्कि उन रणनीतियों और नीतियों की भी पहचान करना है, जो इन असमानताओं को दूर करने में सहायक हो सकती हैं।

महिला शिक्षा का प्रभाव समाज में केवल महिला के अपने जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह समाज के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। जब महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करती हैं तो वे अपने परिवारों को बेहतर दिशा में ले जाती हैं, बच्चों के लिए अच्छे अवसर प्रदान करती हैं और एक सशक्त समाज का निर्माण करती हैं। इस शोध का लक्ष्य महिला शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उसकी बाधाओं और संभावनाओं को समझकर एक सशक्त और समान शिक्षा

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

प्रणाली की दिशा में सुझाव देना है। यह अध्ययन महिला शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान असमानताओं का विश्लेषण करेगा, साथ ही यह जानने का प्रयास करेगा कि किस प्रकार से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा के स्तर में भिन्नताएँ उत्पन्न होती हैं और इन भिन्नताओं को दूर करने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं।

उद्देश्यः

1. यह शोध पत्र महिला शिक्षा में व्याप्त असमानताओं और उसके प्रभावों का गहराई से अध्ययन करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।
2. अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा के स्तर में क्या अंतर हैं और उन अंतरालों के पीछे क्या कारण हैं।
3. महिला शिक्षा के मार्ग में आने वाली सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक बाधाओं को पहचानना।
4. महिला शिक्षा के अंतर को कम करने हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।
5. शिक्षा के क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक कदम उठाना।

अनुसंधान पद्धतिः

इस शोध में रोहतक जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार का है। अध्ययन क्षेत्र के लिए रोहतक जिले की तहसील महम के ग्रामीण क्षेत्र और शहरी क्षेत्र को चयनित किया है। इस अध्ययन के लिए 300 महिलाओं को चयनित किया गया, जिनमें 150 ग्रामीण और 150 शहरी क्षेत्रों से थीं। जिसके लिए उद्देश्यपूर्ण तथा यादृच्छिक पद्धति का मिश्रण अपनाया गया। संकलित आंकड़ों का विश्लेषण एसपीएसएस/एक्ससल की सहायता से किया गया। प्रश्नावली को विशेषज्ञों की समीक्षा से वैध बनाया गया।

साहित्य समीक्षाः

महिला शिक्षा एवं उनके सशक्तिकरण पर किए गए विभिन्न शोधों, पुस्तकों और लेखों का अध्ययन इस बात को प्रमाणित करता है कि शिक्षा महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है।

सज्जन कुमार (2023) अपने अध्ययन में बताते हैं कि आज भी शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति अधिक कमजोर है। सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों एवं योजनाओं के बावजूद वे पुरुष वर्ग की तुलना में कुछ हद तक निम्न स्थिति में हैं। वे बताते हैं कि महिलाओं द्वारा असमान लिंग मानदंडों को स्वीकार करना आज भी समाज में प्रचलित है। शिक्षा, रोजगार और सामाजिक संरचना में परिवर्तन से ही महिलाओं का सशक्तिकरण संभव हो सकता है। (5)

The Research Analytics ISSN (Online): 3107-6165
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)

आसिया और मंजूषा (2021) अपने शोध में ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने में महिलाओं को आने वाली चुनौतियों के विभिन्न कारकों, जैसे व्यक्तिगत समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ, बुनियादी ढाँचा और सामाजिक समस्याएँ, पर चर्चा करते हैं। (6)

घोष (2021) ने अपनी पुस्तक में यह स्पष्ट किया कि शिक्षा महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करती है। उनके अध्ययन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में असमानता महिलाओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करती है। (7)

गुप्ता और राव (2020) अपने लेख में भारतीय ग्रामीण और शहरी महिलाओं की शिक्षा दरों में असमानता पर बात करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक रूढ़ियों और आर्थिक बाधाओं के कारण महिला शिक्षा सीमित है। वहीं शहरी क्षेत्रों में बेहतर शिक्षा प्रणाली के बावजूद महिलाएँ पारिवारिक और सामाजिक दबाव के कारण पूरी क्षमता से इसका लाभ नहीं उठा पातीं। (8)

पटेल (2019) अपने अध्ययन में चर्चा करते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा को पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक परंपराओं के चलते प्राथमिकता नहीं दी जाती। शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा की स्थिति तुलनात्मक रूप से बेहतर है, लेकिन वहाँ भी महिलाओं के लिए करियर और परिवार के बीच संतुलन बनाना कठिन है। (9)

देसाई और कुलकर्णी (2019) ने अपनी पुस्तक में महिला शिक्षा को महिलाओं के लिए सामाजिक बदलाव और आत्मनिर्भरता का मुख्य स्रोत बताया है। शिक्षित महिलाएँ न केवल अपने परिवार और समुदाय में बदलाव लाती हैं, बल्कि सामाजिक असमानता को कम करने में भी योगदान देती हैं। (10)

सल्वान, ए (2017) अपने लेख में छात्राओं को करियर को बेहतर बनाने में जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनका वर्णन करते हैं। जिनमें परिवार, समाज, आर्थिक समस्याएँ और शिक्षा के प्रति लैंगिक असमानता का दृष्टिकोण मुख्य हैं। इसके चलते लड़कियों के स्कूल छोड़ने का अनुपात बढ़ा है। उनका कहना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में ग्रामीण छात्राओं को बनाए रखने के लिए प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। (11)

शर्मा (2018) ने अपनी पुस्तक में हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा के सामने आने वाली चुनौतियों का विस्तृत वर्णन किया है। हरियाणा में पितृसत्तात्मक सोच और बाल विवाह की प्रथा महिलाओं की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है। (12)

डेटा विश्लेषण और व्याख्या :

एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णात्मक सांख्यिकी का उपयोग करके किया गया है, जिसमें आवर्ती वितरण, प्रतिशत और तुलनात्मक विश्लेषण शामिल है। परिणामों की स्पष्ट छवि प्रदान करने के लिए प्राप्त जानकारी को तालिकाओं और ग्राफ में प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषण का उद्देश्य अध्ययन चरों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के बीच के अंतर और

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

समानताओं का उजागर करना है। साथ ही, उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में शिक्षा और जागरूकता की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करना है।

शिक्षा के स्तर में अंतर केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के मूलभूत ढाँचे, मानसिकता और अवसरों की उपलब्धता को भी दर्शाता है।

तालिका 1 में 2011 की जनगणना के अनुसार महम तहसील की ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की शैक्षिक योग्यता के स्तर का तुलनात्मक वितरण दर्शाया गया है।

2011 के आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्र में कुल जनसंख्या 20484 थी, जिसमें से पुरुषों की जनसंख्या 10848 एवं महिलाओं की जनसंख्या 9636 थी। पुरुषों की साक्षर संख्या 8359 एवं महिलाओं की साक्षर संख्या 6305 थी।

वहीं ग्रामीण क्षेत्र में महम गांव की कुल जनसंख्या 7500 थी, जिसमें से पुरुषों की जनसंख्या 4030 एवं महिलाओं की संख्या 3548 थी। पुरुष साक्षर संख्या 2948 एवं महिलाओं की साक्षर संख्या 2070 थी। (13)

प्राप्त आँकड़े शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की शैक्षिक योग्यता में स्पष्ट अंतर दिखाते हैं। वहीं प्राथमिक सर्वेक्षण के ताज़ा आंकड़े भी यही संकेत देते हैं कि आज भी दोनों क्षेत्रों में स्पष्ट अंतर मौजूद है।

तालिका 1 : **शैक्षिक योग्यता स्तर**

जनसंख्या	पुरुष			स्त्री		
	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल
संख्या	4030	10848	14878	3548	9636	11307
साक्षरता	2948	8359	13184	2070	6305	8375

स्रोत : भारतीय जनगणना रिपोर्ट 2011 पर आधारित

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

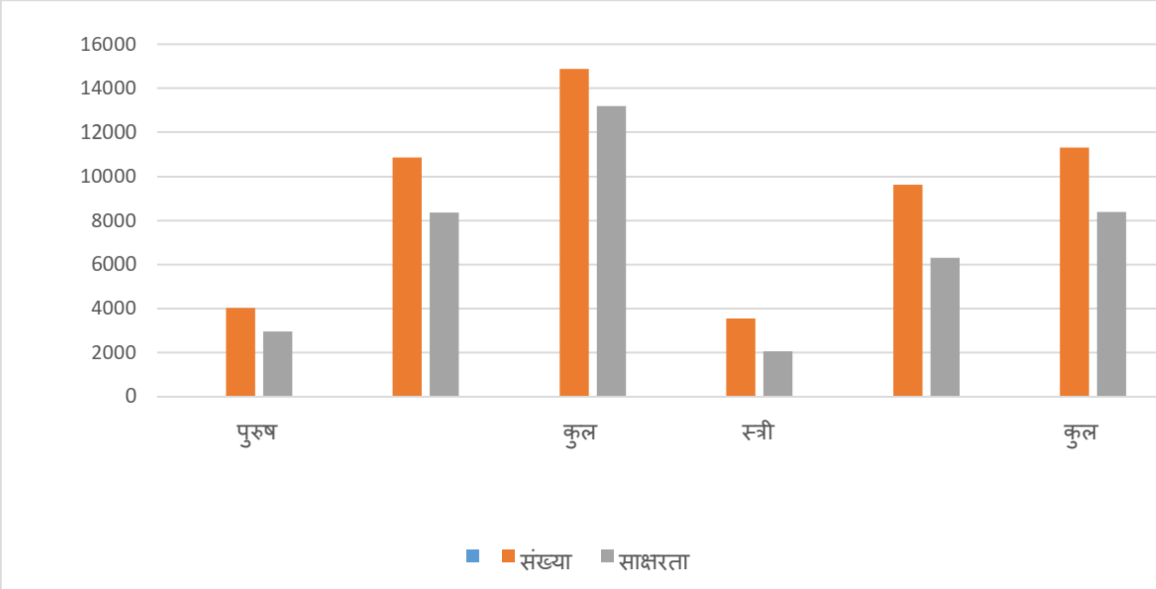

चित्र 1: शैक्षिक योग्यता स्तरों का ग्राफ़िकल प्रतिनिधित्व

वहीं दूसरी ओर तालिका 2 में प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा किए गए ग्रामीण और शहरी महिलाओं की शैक्षिक योग्यता के स्तर का तुलनात्मक वितरण दर्शाया गया है। कुल 300 महिलाओं को चुना गया है, जिन्हें दोनों समूहों (प्रत्येक 150) में समान रूप से विभाजित किया गया है। प्राप्त आँकड़े शैक्षिक योग्यता में स्पष्ट अंतर दिखाते हैं। ग्रामीण महिलाओं में 24% महिलाएं अशिक्षित हैं जबकि शहरी महिलाओं में केवल 5% ही अशिक्षित हैं। ग्रामीण महिलाओं में केवल 30% महिलाएं प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच पाई हैं, जबकि शहरी महिलाओं में यह संख्या मात्र 10% है। शहरी वर्ग 35% के साथ माध्यमिक शिक्षा में भी ग्रामीण उत्तरदाताओं के 25% आंकड़ों से अधिक है। इसी प्रकार 30% शहरी महिलाओं ने उच्चतर माध्यमिक स्तर की स्कूली शिक्षा पूरी की है, जबकि ग्रामीण महिलाओं में यह संख्या मात्र 10% है।

तालिका 2 : शैक्षिक योग्यता स्तर (ग्रामीण बनाम शहरी महिलाएं)

शिक्षा स्तर	**ग्रामीण महिलाएं (%)**	**शहरी महिलाएं (%)**
कोई औपचारिक शिक्षा नहीं	24%	5%
मात्र प्राथमिक शिक्षा	30%	10%
मात्र माध्यमिक शिक्षा	25%	35%
उच्च शिक्षा	10%	30%

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

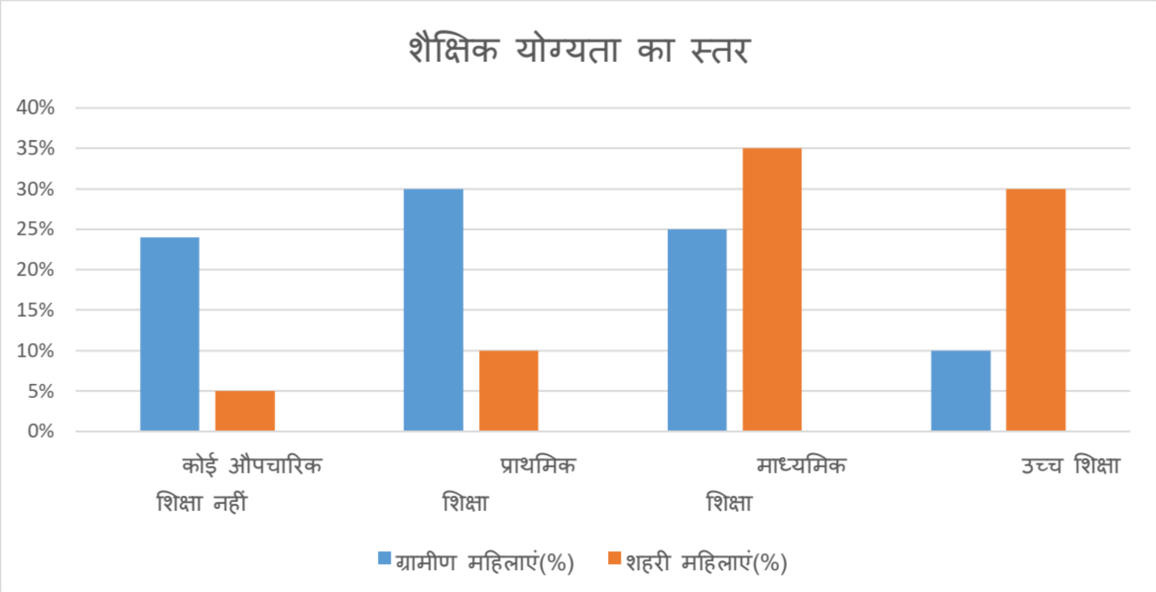

चित्र 2: शैक्षिक योग्यता स्तरों का ग्राफ़िकल प्रतिनिधित्व

जैसा कि चित्र 2 में दर्शाया गया है, यह जानकारी ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के मध्य एक विशाल शैक्षिक अंतर को दर्शाती है। गुणवतापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच, गरीबी, लैंगिक भूमिकाओं के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण, साथ ही ग्रामीण समुदायों में बाल विवाह जैसे कारकों के कारण ग्रामीण महिलाएं शहरी महिलाओं की तुलना में कम शिक्षित या निरक्षर हैं। इस शैक्षिक अंतर का रोज़गार, सामाजिक अधिकारों की जागरूकता एवं सामुदायिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। निष्कर्षतः इस अंतर को कम करने एवं समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा नीतियों एवं सहायता संरचनाओं की आवश्यकता पर प्रकाश डालना अत्यंत आवश्यक है।

तालिका 3: सामाजिक अधिकारों (संपत्ति अधिकार, कानूनी सुरक्षा) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक स्तर

जागरूकता स्तर	ग्रामीण महिलाएं (%)	शहरी महिलाएं (%)
उच्च जागरूकता	20%	65%
मध्यम जागरूकता	35%	30%
कम जागरूकता	50%	10%

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

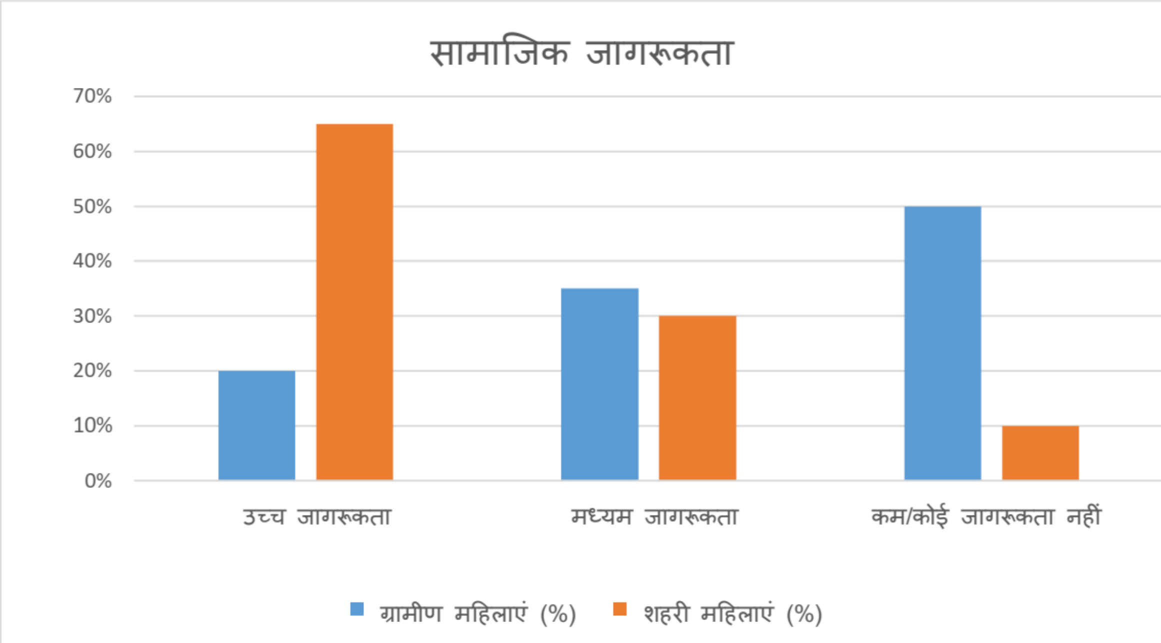

चित्र 3: सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का चित्रमय प्रतिनिधित्व

ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के बीच जागरूकता के स्तर में भारी अंतर महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक शिक्षा एवं सूचना तक पहुँच के व्यापक प्रभाव की कमी को दर्शाता है। शहरी महिलाओं को बेहतर शिक्षा, सामुदायिक कार्यक्रमों तथा कानूनी संसाधनों तक आसान पहुँच से उनके अपने अधिकारों के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करने की संभावना अधिक रहती है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र की कम शिक्षित और कम संसाधनों वाली महिलाएं सामाजिक अधिकारों की जानकारी से कम परिचित होती हैं, जिसके चलते उनकी नागरिक भागीदारी कम होती है और सामाजिक गतिशीलता सीमित होती है। ग्रामीण महिलाओं को शिक्षित करके और कानून के प्रति जागरूक बनाकर उनकी सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सकता है। सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता से लैंगिक भेदभाव को समाप्त करके लैंगिक समानता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

2011 की जनगणना के अनुसार महम तहसील की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की कामकाजी स्थिति को देखें तो हमें दोनों के मध्य स्पष्ट अंतर प्राप्त होता है। ग्रामीण महिलाओं की जनसंख्या 3548 थी, जिसमें से मात्र 466 महिलाएं ही कामकाजी थीं, जो कि उनकी संख्या का 13% थी। जबकि शहरी महिलाओं की जनसंख्या 9636 थी, जिसमें से 1056 महिलाएं कामकाजी थीं। (14)

वहीं तालिका 4 महम तहसील के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की महिलाओं के प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त किये गए आंकड़ों में उनकी कामकाजी स्थिति को दर्शाती है, जिससे हमें दोनों के

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

मध्य स्पष्ट अंतर प्राप्त होता है। ग्रामीण महिलाओं में से मात्र 16% ही कामकाजी हैं, जबकि शहरी महिलाओं में से 40% किसी ना किसी प्रकार के रोजगार में कार्यरत हैं। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण महिलाओं में से 85% बेरोजगार हैं, जबकि शहरी महिलाओं में यह प्रतिशत 55% है।

तालिका 4: कामकाजी स्थिति

कामकाजी स्थिति	ग्रामीण महिलायें (%)	शहरी महिलायें (%)
कामकाजी	16%	40%
बेरोजगार	85%	55%

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

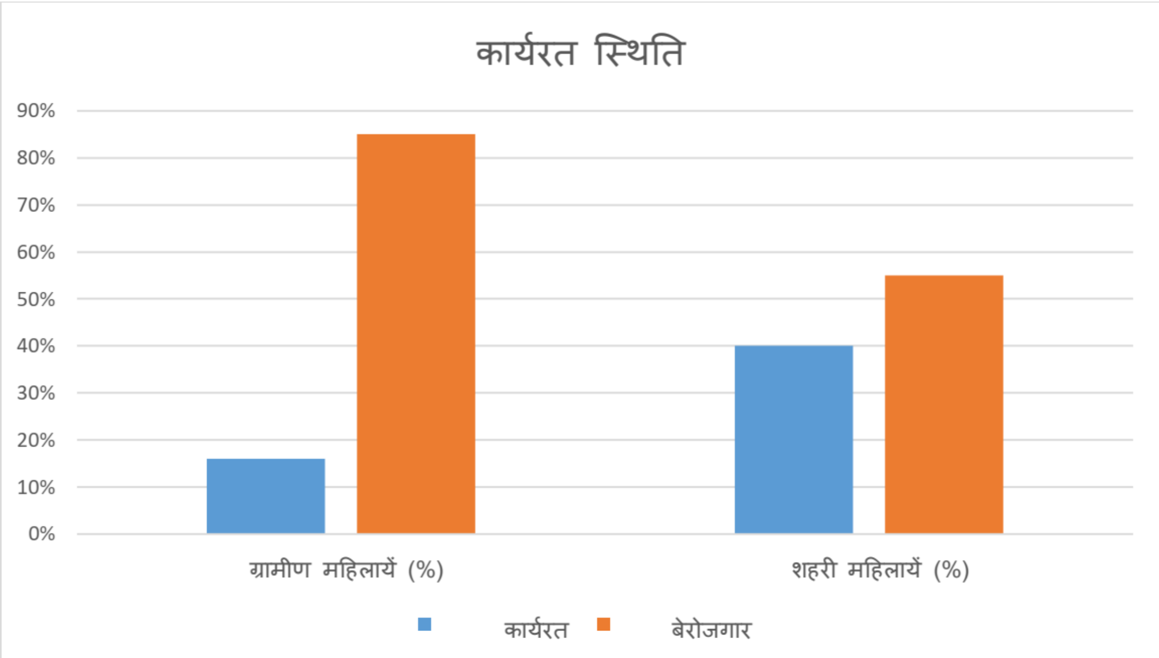

चित्र 4: कामकाजी महिलाओं की स्थिति का चित्रमय प्रतिनिधित्व

चित्र 4 में प्रस्तुत आँकड़े ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच आर्थिक अवसरों की उपलब्धता में गहरी असमानता को दर्शाते हैं। शहरी महिलाओं की कामकाजी स्थिति से स्पष्ट होता है कि उन्हें श्रम बाजारों तक बेहतर पहुँच, विविध रोजगार अवसर, तथा अपेक्षाकृत उच्च शिक्षा स्तर का लाभ मिलता है। इसके विपरीत ग्रामीण महिलाओं को सीमित रोजगार अवसर, निम्न शैक्षिक स्तर और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी आर्थिक सक्रियता को सीमित करती हैं।

ग्रामीण महिलाओं में बेरोजगारी की उच्च दर यह संकेत देती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, कौशल विकास और आर्थिक अवसर बढ़ाने हेतु सरकारी स्तर पर विशेष नीतियों और कार्यक्रमों की आवश्यकता है। साथ ही, शैक्षिक सुविधाओं और व्यावसायिक प्रशिक्षण में सुधार

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

कर ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच रोजगार संबंधी अंतर को कम किया जा सके।

तालिका 5 प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं से लिए गए साक्षात्कारों के आधार पर प्राप्त प्रतिशत आँकड़ों को दर्शाती है। सामाजिक कारकों से जुड़े प्रश्नों का उत्तर महिलाओं ने हाँ/नहीं के रूप में दिया था।

आँकड़ों के अनुसार 60% शहरी महिलाएं अपने घर परिवार और वित्तीय निर्णयों में भागीदारी रखती हैं, जबकि ग्रामीण महिलाओं में यह प्रतिशत 38% है। 25% शहरी महिलाओं ने जल्दी विवाह को शिक्षा में बाधा माना है, जबकि ग्रामीण महिलाओं में यह प्रतिशत 52% है। आर्थिक स्थिति को शिक्षा में बाधा के रूप में 30% शहरी महिलाओं ने स्वीकार किया, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या 50% है। कार्यस्थलों पर लैंगिक असमानता का अनुभव शहरी क्षेत्र की 15% महिलाओं ने किया है, जबकि ग्रामीण महिलाओं में यह स्तर 35% पाया गया।

तालिका 5: महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक

प्रश्न	ग्रामीण महिलाएं(%)	शहरी महिलायें(%)
क्या आपकी अपने घर- परिवार से संबंधित एवं वित्तीय निर्णय लेने मे भागीदारी है?	38%	60%
क्या जल्दी विवाह को आपकी शिक्षा में बाधा माना जा सकता है?	52%	25%
क्या परिवार की आर्थिक स्थिति आपकी शिक्षा में बाधा बनी है?	50%	30%
क्या आपने कभी अपने कार्यस्थल पर लिंग आधार पर असमानता का अनुभव किया है?	35%	15%

स्त्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

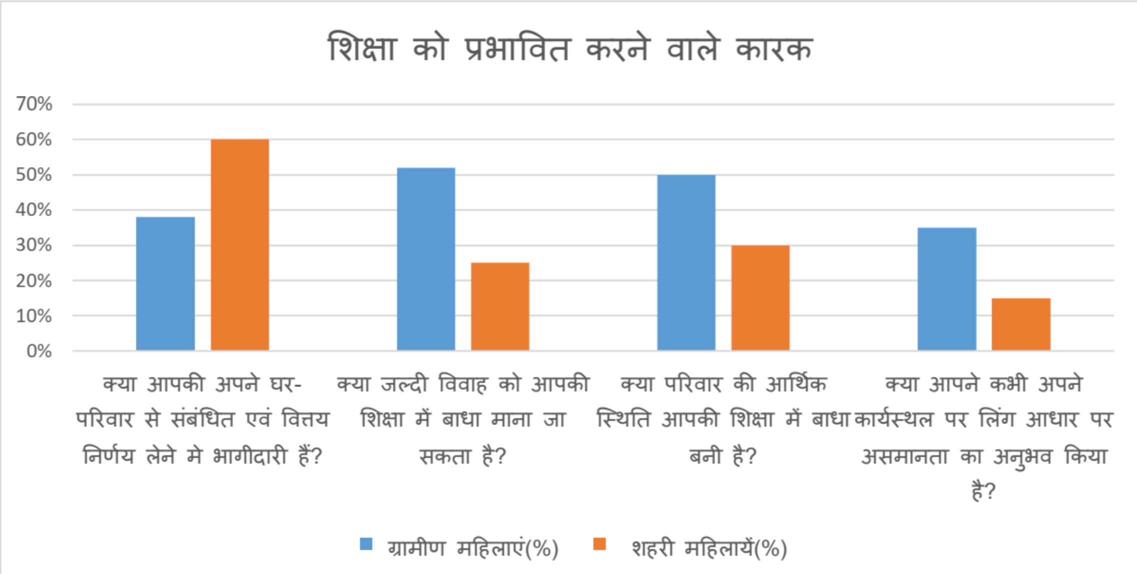

चित्र 5 : महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों का चित्रमय प्रतिनिधित्व

चित्र 5 में दर्शाए गए आंकड़ों को देख कर स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि सामाजिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक कारक महिलाओं की शिक्षा एवं उनके स्तर को प्रभावित करते है, किंतु शहरी क्षेत्र की तुलना में यह दर ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादा देखने को मिलती है। ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय की घर से ज्यादा दूरी और पितृसतात्मक सोच लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने मे बाधा उत्पन करती है। ग्रामीण क्षेत्र मे अधिकतर लड़कियों का कम उम्र मे विवाह कर दिया जाता है, जो उनकी शिक्षा प्राप्ति मे एक अवरोधक का कार्य करता है। ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक रूप से कमजोर बालिकाओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर और सामाजिक जगृति पर आधारित विभिन्न कार्यकर्मों के आयोजनों द्वारा इस अंतर को कम किया जा सकता है।

1971 से 2011 के बीच ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिला साक्षरता में सुधार हुआ। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि की गति शहरी क्षेत्रों की तुलना में धीमी रही है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचे और जागरूकता अभियान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक संसाधनों की कमी और शैक्षणिक आधारभूत ढाँचे की अनुपलब्धता महिला शिक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। स्कूलों की कमी, शिक्षकों की अनुपस्थिति और विद्यालय के लिए लंबी दूरी तय करने की बाधाएँ ग्रामीण लड़कियों को शिक्षा से वंचित करती हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्र में शिक्षा तक पहुँच बेहतर है, जहाँ निजी और सार्वजनिक संस्थानों का बड़ा नेटवर्क मौजूद है। लेकिन शहरी क्षेत्र में भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का अवसर केवल आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों तक ही सीमित है। (15)

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

साथ ही कुछ हद तक शहरी महिलाओं को भी पारिवारिक और सामाजिक अपेक्षाओं से जूझना पड़ता है, जो उनकी शिक्षा और व्यावसायिक उन्नति को बाधित करती हैं। इस मत को अन्य शोधकर्ताओं के अध्ययन में भी स्वीकार किया गया है, कि ऐसे बहुत सारे चर हैं जिससे ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के बीच शिक्षा का अंतर पाया जाता है और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है।

रिसर्च स्कॉलर पूनम पुष्पा (2025) ने अपने लेख में झारखंड राज्य में ग्रामीण और शहरी महिलाओं की शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक एवं कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं रोजगार स्तर की तुलना की है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया है कि ग्रामीण महिलाएँ कम शिक्षित हैं, साथ ही सामाजिक अधिकारों की कम जानकारी रखती हैं। उनके पास शहरी महिलाओं के समकक्षों की तुलना में कम नौकरी के अवसर हैं। (16)

नीरज (2019) ने अपने लेख में हरियाणा के सोनीपत जिले की शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों के संबंध में महिलाओं के अधिकारों के बीच अंतर का विश्लेषण किया है। किशोर लड़कियां वयस्क महिलाओं की स्थिति को प्रतिबिंबित करती है। उन्होंने भी अध्ययन में पाया हैं कि शहरी लड़कियों को ग्रामीण लड़कियों की तुलना में अपने अधिकारों के बारे में ज़्यादा जागरूकता है। (17)

शोध के दौरान सरकारी नीतियों और योजनाओं की प्रभावशीलता का आकलन भी किया गया है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (2015), आपकी बेटी हमारी बेटी (2015), राजीव गांधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (सबला) (2010) जैसे अभियानों ने महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लक्ष्य पर कार्य किया है एवं महिलाओं की शिक्षा के महत्व को बढ़ावा दिया लेकिन इनका वास्तविक लाभ शहरी क्षेत्रों में अधिक और ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पाया गया। (18) योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अभी भी एक चुनौती बना हुआ है। जागरूकता की कमी और सरकारी तंत्र की कमजोरियाँ इन योजनाओं की सफलता को बाधित करती हैं।

इस अध्ययन में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के बीच गहरा संबंध देखा गया। शिक्षित महिलाएँ आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ती हैं, परिवार और समाज में निर्णायक भूमिका निभाती हैं और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं। इसके विपरीत, अशिक्षित या कम शिक्षित महिलाएँ सामाजिक और आर्थिक बाधाओं के कारण अपनी क्षमता को पूर्ण रूप से विकसित करने में असमर्थ रहती हैं। (19) यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि शिक्षा न केवल महिलाओं को व्यक्तिगत सशक्तिकरण प्रदान करती है, बल्कि उन्हें समाज के विकास में भागीदार भी बनाती है।

सांख्यिकीय आँकड़ों ने महिला शिक्षा में क्षेत्रीय असमानताओं को और भी स्पष्ट कर दिया है। शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक है। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएँ प्राथमिक स्तर की शिक्षा भी

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

पूरी नहीं कर पातीं। यह असमानता समाज में गहराई से व्याप्त सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को दर्शाती है।

ग्रामीण और शहरी महिलाओं की शिक्षा के प्रति समाज के दृष्टिकोण में भी स्पष्ट अंतर देखा गया। शहरी परिवार शिक्षा को आवश्यक मानते हैं लेकिन वहाँ भी महिलाओं को करियर और पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन बनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को अक्सर लड़कियों के जीवन में गौण माना जाता है, जहाँ प्राथमिकता जल्दी विवाह और घरेलू जिम्मेदारियों को दी जाती है। (20)

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला शिक्षा केवल उनके जीवन को सशक्त बनाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज के व्यापक विकास और समृद्धि का आधार है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की असमानताओं को दूर करने और महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने के लिए व्यापक नीतिगत सुधार, सामुदायिक जागरूकता और प्रभावी योजनाओं के क्रियान्वयन की आवश्यकता है। सामाजिक सोच में बदलाव और शिक्षा के प्रति परिवारों का दृष्टिकोण बदले बिना इस असमानता को दूर करना संभव नहीं है।

निष्कर्षः

"परिवर्तन की दस्तकः रोहतक जिले में ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षा की वास्विकता और संभावनाएँ" विषय पर आधारित यह शोध महिला शिक्षा के महत्व और उसकी व्यापक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों को उजागर करता है। यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा तक पहुँच की असमानताओं को रेखांकित करता है, जो समाज के विभिन्न स्तरों पर मौजूद संरचनात्मक और वैचारिक बाधाओं को दर्शाता है।

शोध के निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा महिलाओं के जीवन में न केवल आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है, बल्कि उन्हें सामाजिक और आर्थिक निर्णयों में भागीदार बनने के लिए भी सशक्त करती है। शिक्षित महिलाएँ न केवल अपनी व्यक्तिगत प्रगति करती हैं, बल्कि परिवार और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में भी योगदान देती हैं। यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि महिला शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र की प्रगति का एक शक्तिशाली साधन है।

हालाँकि, यह भी स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के स्तर में असमानता अब भी बनी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए केवल योजनाएँ और नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं; इनके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सामुदायिक जागरूकता और समाज में मानसिकता परिवर्तन की आवश्यकता है। शहरी क्षेत्रों में, महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने और करियर में सफल होने के लिए सामाजिक और पारिवारिक समर्थन की आवश्यकता है।

इस अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि महिला शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के बावजूद अनेक चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं। इन चुनौतियों का समाधान व्यापक दृष्टिकोण और ठोस नीतिगत

The Research Analytics
An International Journal of Multidsciplinary Research for Advanced Studies
(Open Access, Peer Reviewed and indexed)
Volume 1, Special Issue 3 (October 2025)
ISSN (Online): 3107-6165

हस्तक्षेपों के माध्यम से किया जा सकता है। इसमें समाज के हर स्तर पर बदलाव लाने के प्रयास शामिल होने चाहिए, ताकि शिक्षा को हर महिला का मौलिक अधिकार और समाज में उसकी समान भागीदारी का आधार बनाया जा सके।

अनुशंसाः

"परिवर्तन की दस्तकः रोहतक जिले में ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षा की वास्विकता और संभावनाएँ" विषय पर आधारित शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर, महिला शिक्षा में सुधार और असमानताओं को दूर करने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें दी जा सकती हैं:

महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को लेकर परिवारों और समाज की मानसिकता को बदलने के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इन अभियानों में स्थानीय समुदायों और प्रभावशाली व्यक्तियों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि शिक्षा का महत्व हर स्तर पर समझाया जा सके।

शैक्षिक बुनियादी ढाँचे में सुधार अनिवार्य है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें सुदृढ़ करना चाहिए। विशेष रूप से लड़कियों के लिए सुरक्षित और सुलभ स्कूल परिवहन की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा, स्कूलों में शिक्षकों की उपलब्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

आर्थिक बाधाओं को दूर करने के लिए छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता प्रदान करने की योजनाएँ लागू की जानी चाहिए। गरीब और वंचित परिवारों की लड़कियों के लिए शिक्षा मुफ्त या न्यूनतम शुल्क पर उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसके साथ ही, शिक्षा के साथ-साथ पोषण और स्वास्थ्य से जुड़ी सुविधाओं को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। शहरी क्षेत्रों की शिक्षित महिलाओं को ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनाते हुए उन्हें मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

इन सिफारिशों का उद्देश्य महिला शिक्षा के स्तर को सुधारना और समाज में एक ऐसा वातावरण बनाना है, जहाँ हर लड़की को उसकी शिक्षा और विकास के लिए समान अवसर और समर्थन प्राप्त हो सके। यह केवल महिलाओं के सशक्तिकरण का माध्यम नहीं होगा, बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए भी अनिवार्य होगा।

References

1. UNESCO'S efforts to achieve gender equality in and through education. UNESCO. France: United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, 2022.
2. The Social Status of Indian Women of Different Periods in the Patriarchal Society. H. Patil, Dr. Ramesh. 4, s.l.: An International Multidisciplinary e-Journal, Welfare Universe, August 2021, Vol. 5. pp. 1-10.

3. Role of Education in Women Empowerment. Mutyalu, T. 5, s.l.: Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, May 2019, Volume 6.
4. India, Registrar Census of India 2011, Haryana, Series-07, Part XII-B, Rohtak District Census Handbook. Delhi: Ministry of Home Affairs, 2011.
5. Status of Rural Women (A Case Study of Rohtak District). Kumar, Sajjan. 4, s.l.: International Journal of Novel Research and Development (IJNRD), 2023, Volume 8.
6. A Study on the Challenges Faced by Women in Accessing Education. Aasia Ahmed Radiowala and Manjusha S. Molwane. 4, s.l.: Journal of Scientific Research, 2021, Vol. 65.
7. Ghosh, A. Empowering Women through Education: A Study of India's Rural and Urban Education Systems. New Delhi: Sage Publications, 2021.
8. Challenges to Women's Education in Rohtak District: A Study. N. Gupta & P. Rao. 4, s.l.: Journal of Educational Planning and Administration, 2020, Vol. 34. 57-73.
9. Challenges to Women's Education in Rural India: A Critical Analysis. Patel, M. 30, s.l.: Economic and Political Weekly, 2019, Vol. 54. 33-38.
10. S. Desai & R. Kulkarni. Women Education and Social Empowerment in India. UK: Oxford University Press, 2019.
11. Problem of Rural Girl Students in Higher Education Institutions. Salvan, A. 23, s.l.: Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 2017, Vol. 4.
12. Sharma, P. Educational Disparities between Rural and Urban Areas. Jaipur: Rawat Publications, 2015.
13. District Statistical Officer, Rohtak. District Statistical Summary Rohtak. Haryana: Department of Economics and Statistical Analysis, 2010-2011.
14. District Statistical Summary, Rohtak. Haryana: Department of Economics and Statistical Analysis, 2010-2011.
15. Government of India, Education for All: Annual Status Report (ASER). New Delhi: Ministry of Human Resource Development, 2011.
16. A Comparative Study of Education between Rural and Urban Areas and It's Impact on Society. Punam Puspa Murmu & Dr. Awadhesh Kumar Yadav. 6, s.l.: International Journal of Advance Scientific Research and Engineering Trends, June 2025, Vol. 9.
17. A Study on Awareness Regarding to Right of Women in Urban and Rural Adolescent Girls in Haryana. Neeraj. 2, s.l.: Research Review International Journal of Multidisciplinary, Feb 2019, Vol. 4.
18. The Impact of Government Policies on Women Empowerment in India. Roy, Sourav. 6, s.l.: International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), June 2025, Vol. 13.
19. Girl's Education in Rural India: Barriers, Challenges and Policy Interventions. Premachandran, P. 1, s.l.: International Journal of Teacher Education Research Studies (IJTERS), 2025, Vol. 2.
20. Empowering Rural Indian Women Through Education: The Role of Teachers in Overcoming Socio-Economic Barriers. Kaur, Manmeet. 6, s.l.: Journal of Advanced Zoology, 2023, Vol. 44. 451-463.